नाम **निकहत**

शोध-निर्देशिका **डा० कहकशाँ ए. साद**

हिन्दी विभाग

मानविकी एवं भाषा संकाय

स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में कृष्णा सोबती और इस्मत चुग़ताई के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में कृष्णा सोबती और इस्मत चुग़ताई के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन'' में हिन्दी–उर्दू लेखिकाओं के कथा साहित्य में मुखरित स्त्री विमर्श को अध्ययन के केन्द्र में रखा गया है। इस शोध प्रबन्ध के अर्न्तगत स्त्री विमर्श की वैचारिक अवधारणा को विवेचित और विश्लेषित किया गया है। नारीवाद शब्द का संबध नारी मुक्ति से जुड़ा है जो एक विचारधारा से प्रेरित है,जिसके अर्न्तगत महिला उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं के विरूद्ध गतिशील और निरंतर परिवर्तित होने वाली विचारधारा है। नारीवाद नारी जागरूकता का दस्तावेज है जो स्त्रियों के अधिकारों का समर्थन करता है तथा व्यवस्था के द्वारा किये जा रहे अत्याचारों के विरूद्ध संघर्ष की आवाज बुलन्द करता है। भारतीय संदर्भ में नारीवाद का अर्थ एक व्यक्ति के रूप में जीने का अधिकार मांगना, अपने अस्तित्व और अस्मिता की पहचान बनाना और पुरूषों के आमानुषिक व्यवहार के खिलाफ आवाज उठाना है। भारत में स्त्री विमर्श का प्रारम्भ नवजागरण के समय से हो गया था अतः नवजागरण की लहर हिन्दी–उर्दू साहित्य में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

इस्मत चुग़ताई और कृष्णा सोबती दोनो लेखिकाओं ने स्त्री की समस्याओं पर लेखन किया और रूढ़ियों का विरोध किया।कृष्णा सोबती ने अपने साहित्य द्वारा पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की स्थिति का अवलोकन किया है और स्त्री के अन्तर्द्वन्द्व को परत दर परत खोलने का प्रयास किया है। इस्मत चुग़ताई ने अपने कथा साहित्य के द्वारा निम्न एव मध्यवर्गीय नारी की जिंदगी के यथार्थ को ,यौन घुटन , सामाजिक अड़चनों और औरतों पर पुरूषों के अत्याचारों को उकेरने की कोशिश की है।इस्मत चुग़ताई ने अपने साहित्य द्वारा मुस्लिम घरों की लड़कियों की जिंदगी और उनसे जुड़ी यौन घुटन, द्वन्द्व, शोषण और स्त्री के विद्रोह को प्रकट किया। इस्मत चुग़ताई का लेखन पारम्परिक लेखन से अलग नज़र आता है। इन्होने हमेशा परम्पराओं और रूढ़ियों को तोड़ने का समर्थन किया है। इस्मत चुग़ताई

और कृष्णा सोबती दोनो लेखिकाओं ने स्त्री की समस्याओं पर लेखन किया और रूढ़ियों का विरोध किया। कृष्णा सोबती और इस्मत चुग़ताई के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न, स्त्री की अन्तर्द्वन्द्वात्मक स्थिति और यौनिकता के प्रश्न को विषय बनाया गया है। कृष्णा सोबती ने 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी', 'सूरजमुखी अंधेरे के' और 'दिलोदानिश' में स्त्री अस्मिता को तलाशने का प्रयास है और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व को उजागर किया है। इस्मत चुग़ताई ने मुस्लिम मध्यवर्गीय घरानों की पर्दानशीन लड़कियों की मनोवैज्ञानिक उलझनों और उनसे निःसृत होने वाली समस्याओं को अपने उपन्यास का विषय बनाया। इस्मत चुग़ताई ने 'टेढ़ी लकीर', बाँदी, 'दिल की दुनिया', जंगली कबूतर' और 'मासूमा' के द्वारा स्त्री स्थिति और मनोविज्ञान को प्रस्तुत किया है। कृष्णा सोबती और इस्मत चुग़ताई की कहानियों में रूढ़ियों के प्रति विद्रोह,स्त्री की द्वन्द्वात्मक स्थिति और पितृसत्तात्मक समाज के प्रति चुनौती की विवेचना की गई है। कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में मानव की अनुभूतियों, संघर्षों तथा द्वन्द्व के रेशों–को उजागर किया है। उनके साहित्य में कहीं भी स्त्री पुरूष के मध्य द्वन्द नहीं दिखता, वे स्त्री को पुरूष के विरूद्ध नहीं खड़ा करती बल्कि इस पितृसत्तात्मक समाज की रूढ़िवादी रीतियों और परम्पराओं के विरूद्ध चुनौती देती दिखती हैं। इस्मत चुग़ताई ने उर्दू कहानियों में पहली बार समाज की डरी, सहमी और बेबस औरत को बोलना सिखाया। इसके अलावा उनकी कहानियों में समाज के उच्च वर्ग के घरों की औरतों की घुटन भरी जिंदगियों को भी उजागर किया। कृष्णा सोबती की कहानियों में जीवन की जटिलता घुटन, पीड़ा और निराशा का चित्र उभरता है। नारी की विवशता, उसकी स्वतन्त्रता और उसकी आवश्यकताओं को मार्मिक अभिव्यक्ति दी गई है।

निष्कर्षता तुलनात्मक रूप से कृष्णा सोबती और इस्मत चुग़ताई दोनों ही लेखिकाओं ने स्त्री की सुबकती हुई छवि को नकारा है और स्त्री चेतना और सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया है। नारी चेतना का स्वर और अस्तित्व की पहचान दोनों ही लेखिकाओं के कथा साहित्य में समान रूप से मुखरित हुआ है।